संत थॉमस स्कूल, धुर्वा, राँची – 4

(2020-21)

<u>मॉडल उत्तर</u>

कक्षा – पाँच   पाठ – 14, सुख का मार्ग

विषय – हिंदी   पुस्तक – दिव्य भारती-5

उत्तर 1. सोचिए और बोलिए –

I. सूरज ग्रीष्म ऋतु में तपता है।
II. मनुष्य, पशु – पक्षी और समस्त धरती को वर्षा ऋतु में शांति मिलती है।
III. परिश्रम से शिक्षा, मित्र, सहायक, गौरव, प्रेम और सम्मान मिलते हैं।
IV. परिश्रम ही सुख का मार्ग है।

उत्तर 2. I. ग्रीष्म ऋतु में मनुष्य, पशु – पक्षी तथा धरती के सारे जीव भयंकर गरमी से परेशान हो जाते हैं।
II. वर्षा ऋतु गरमी का ताप दूर करती है और सारे जीवों को राहत पहुँचाती हैं।
III. वर्षा ऋतु के आते ही गरमी से व्याकुल जीवों को राहत मिलती है। ताप समाप्त हो जाता है। समस्त धरा पर हरियाली छा जाती है। वर्षा के कारण खेत लहलहा जाते हैं और तरह – तरह के अनाज उपजते है, जिस से सारे संसार की भूख मिटती है।
IV. परिश्रम ही सुख का मार्ग है। हमारे जीवन के लिए जो भी साधन आवश्यक है वह हम परिश्रम के द्वारा ही अर्जित कर सकते हैं। हमें जीवन जीने के लिए शिक्षा, धन, अच्छे मित्र, सम्मान और प्रेम की आवश्यकता होती है जिसके लिए परिश्रम आवश्यक है।
V. जिस प्रकार परिश्रम सुख का मार्ग है उसी प्रकार आलस्य दुखों का द्वार है। जो आलस्य करता है वह संसार में कुछ भी अर्जित नहीं कर पाता है और सभी प्रकार के दुखों को प्राप्त करता है। इसीलिए आलस्य त्याग कर परिश्रम करना चाहिए।

उत्तर 3. I. (क)
II. (ख)
III. (ख)

उत्तर 4. ‘सुख का मार्ग’ कविता हमें परिश्रम का महत्व बताती है। परिश्रम करना हमें अति कष्ट दायक लगता है। हम अपने सुखों का त्याग करके परिश्रम करते हैं। जब परिश्रम का फल हमें मिलता है तो हमें बड़ा ही सुखद अनुभव होता है। इस कविता में परिश्रम की तुलना ग्रीष्म काल से की गई है तथा उसके परिणाम की तुलना वर्षा काल से की गई है। जिस प्रकार उग्र ताप के बाद वर्षा शीतल लगती है उसी प्रकार परिश्रम करने के पश्चात उसके परिणाम भी सुखद होते हैं।

====समाप्त====